International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 29-09-2025, Accepted: 29-10-2025, Published: 13-11-2025
Volume 11, Issue 4, 2025, Page No. 93-95

आधुनिक हिंदी साहित्य में महिला लेखिकाओं की सामाजिक योगदान

श्री मती जी भवानी
शोधार्थी, हिन्दी विभाग, मद्रास विश्वविद्यालय, चेन्नै, तमिलनाडु, भारत

सारांश
स्वतंत्रता हिंदी कथा साहित्य में एक साथ कई महिला लेखिकाओं का आगमन हुआ। मन्नू भंडारी, शिवानी, उषा प्रियंवदा, कृष्णा सोबती, दीप्ति, ममता खालिया, शशि प्रभा शास्त्री, मृदुला गर्ग, चित्रा मृदगल आदि लेखिकाओं का अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान रहा है। नारी स्वतंत्रता के इस युग में नारी का चतुर्मुखी विकास प्रारंभ हुआ। नारी ने पूर्ण रूपेण आर्थिक और सामाजिक स्वतंत्रता प्राप्त कर ली। साहित्य के क्षेत्र में भी उसने अपनी प्रतिभा के आलोक में नारी जीवन के कई अंशु में पहलुओं को उजागर किया है। युग परिवर्तन के साथ–साथ स्त्री पुरुषों के सोचने, समझने में अंतर आने लगा है। पुरुषों की नारी की ओर देखने की दृष्टि बदलती गई परिणाम स्वरुप स्त्री पर पुरुषों का परंपरागत पाश ढीला होता गया। अतः हिंदी उपन्यास साहित्य प्रवृत्तिगत परिवर्तनों के अनेक पड़ावों को पार करके आज हिंदी महिला लेखन एक महत्वपूर्ण बनकर उबर आया है।

मूल शब्दः नारी की सामाजिक स्थिति, नारी की संघर्ष, सामाजिक छेतना, आधुनिक विचार

प्रस्तावना
व्यक्ति साहित्य एवं समाज का घनिष्ठ संबंध है। एक के बिना दूसरे की कल्पना नहीं हो सकता है। व्यक्ति के बिना समाज या समाजहीन साहित्य की कल्पना करना असंभव रहेगी। साहित्य मानव की सामान्य, स्वाभाविक मनोवृत्तियों की अभिव्यक्ति है। समाज में मनुष्य का जन्म होता है वह विभिन्न परिस्थितियों को सामना करके बड़ा होता है। उसको समाज के प्रति सकारात्मक एवं नकारात्मक मानसिकता होती रहती हैं। साहित्यकार साहित्य के माध्यम से उसी को प्रस्तुतीकरण करने में सक्षम रहते है। विशेषता व्यक्ति के जीवन में गुणात्मक एवं उच्च जीवन शैली की अभिव्यक्ति करते हैं। साहित्य विधाओं में उपन्यास महत्वपूर्ण है क्योंकि उपन्यास में समाज का अर्थ सामान्य नहीं बल्कि विशेष रूप से संबंधों के जाल को परिलक्षित करता है। आधुनिक युग में लेखिकाओं ने उपन्यासों के द्वारा समाज के संदर्भ में मानव जीवन की समग्रता को प्रस्तुत करने में अग्रसर रहती हैं।

कृष्णा अग्निहोत्री लिखित और सन 2008 में प्रकाशित हुई उपन्यास है श्नानी, अम्मा मान जाओश । इस उपन्यास में स्त्री जीवन की पीड़ा त्रासदी एवं संघर्ष को व्यक्त किया गया है। साथ ही, स्त्रियों की वर्तमान युवा पीढ़ी से लेकर पूर्व की पीढियों की आशाओं की भी प्रस्तुत किया गया है। स्वतंत्रता भारतीय स्त्री के बदलते रूप को तीन पीढियां के माध्यम अच्छे ढंग से बताते हैं। नहीं चाहे किसी भी रूप में हो वह पुरुष प्रधान समाज द्वारा प्रताड़ित होती हैं। नारी की उनका यह उपन्यास की भूमिका में लिखते हैं कि, "हमारे दो पीढियां ने जुल्म सहे हैं। सतीत्व सील के नाम पर जीवन जिया नहीं, ढोया है। मध्यम में पीढ़ी कमाकर भी अनेक दुविधाओं से घिरी, अपने निर्णय लेने में कमजोरी रही... परंपराओं की कमियॉ समझने वाले भावनाओं को अपराध बोध मानती गोपनीयता बरतती रही।" इस तरह लेखिका कृष्णा अग्निहोत्री नारी की स्थितियों को प्रस्तुत करती हैं।

औद्योगिकरण के फल स्वरुप समाज में परिवर्तन आया है। प्राचीन काल में पुरुष अर्थव्यवस्था का कर्नादर माना जाता था। लेकिन समय के साथ मूल्य में परिवर्तन आया है। इस कारण नर–नारी की आर्थिक एवं सामाजिक परिस्थितियों में भी परिवर्तन हुआ है। समाज में नारी की दयनीय स्थिति का कारण आर्थिक परावलंबन है। लेकिन आज कामकाजी दुनिया में नई अपनी कदम रखकर समाज में एक नया आयाम स्थापित किया है। राजी सेठ ने हंस पत्रिका में लिखते हैं कि "आत्मनिर्भर होने पर सामाजिक स्तर पर उसकी भूमिका स्वतरू बदल जाती है क्योंकि जो ढांचा उसके पराधीन होने की वास्तविकता पर खड़ा है वह स्वत ही ढह जाता है और वह उन मर्यादाओं को अपने आप लांघ जाती हैं जो एक पराधीन मानसिकता के कारण पनपत्ति रही है। यह अतिक्रमण की बड़े एहसासों से जुड़ने की जमीन है।" इस तरह का वर्तमान नारी की स्थिति में अपने विचार को प्रस्तुत करती हैं।

मैत्रेयी पुष्पा ने अपनी उपन्यास बंदी तू ही नारी में पारिवारिक बंधनों में बंदी नारी को पारंपरिक मान्यताओं को छोड़कर आर्थिक स्वावलंबन बनाने के स्वरूप का अंकन करती हैं। परिवर्तन संसार का नियम है अतः परिवर्तन होना मानव जीवन में स्वाभाविक होता है। स्वतंत्रता के बाद शिक्षा का प्रसार भाषा के सभ्यता का प्रभाव आदि ने नारी की अस्तित्व के प्रति जागरूकता की परिणाम या है। अतः नारी की अहम भाव बढ़ गई वैवाहिक संबंधों में शिथिलता, पारिवारिक विघटन, नैतिकता का पतन विकसित हुई। नारी स्वच्छंद जीवन जीना पसंद की। गीतांजलि श्री ने अपने उपन्यास 'माई' में अपनी युवावस्था की अनुभवों को लेकर रचित की। वह माई के प्रति अतीत प्रेम के कारण मां की स्वभाव में सहनशीलता नर्मदा और उदारता से बेटी सुनैना ठान लेती है कि वह माई नहीं बनेगी। परंपरागत पुरानी धारणाओं का शिकार नहीं बनना चाहती। नारी की यह पीड़ा ग्रस्त स्थिति को महसूस करते हुए वह एक विचार पर होती है। वह आजादी चाहती है। नयी पहचान चाहती है। नयी आइडेंटी की अपेक्षा रखती हैं।

गीतांजलि श्री ने औरत तो चार दीवारों के अंदर रखने की बात का खंडन करके स्वच्छंद व्यक्तित्व को प्रस्तुत करते हैं। इसका प्रस्तुतिकरण 'माई' उपन्यास में इस प्रकार है कि, "मुझे माई नहीं बनना, मैं माई वैसे भी नहीं बनूंगी, माई खुद मुझे माई नहीं बनाती.. मुझे उसके इतिहास से लड़ना है, नकारना है।" यहां श्माईश शब्द का अर्थ बंधनों में नहीं रहना है। इस प्रकार परिवर्तित नारी की जीवन मूल्य से वह चाहते हुए या न चाहते हुए भी नारी को आदर्श मूल्यों को तोड़ना पड़ता है।

लेखिका नासिरा शर्मा ने 'पारिजात' उपन्यास में विवाह के संबंध में वर्तमान स्थिति को चित्रण करते हैं इस उपन्यास का विधवा नारी रूही ने पुनर विवाह करने के लिए रोहन से अपनी मानसिकता को इस प्रकार व्यक्त करती हैं की, ष्नई जिंदगी को शुरू करने से पहले मैं अपने को मौका देना चाहती हूं अपने को आजमाना शक्ति चाहती हूं कि हम एक अच्छे दोस्त होने के बाद क्या हम बेहतर मियां बीवी भी बन सकते हैं? हमारे पैरों के नीचे जमीन दलदली नहीं बल्कि चट्टान की सख्त हो।"

सन 1971 में मन्नू भंडारी की उपन्यास 'आपका बंटी' में तलाकशुदा दंपत्ति और उनकी संतान ही मानसिकता को केंद्र में रखकर प्रस्तुत किया गया है। वैवाहिक संबंधों के प्रति और पारिवारिक जीवन मूल्यों को प्रस्तुत किया है। भारतीय समाज स्त्री का नैतिक अधिष्ठान है मूल्य है। विवाह हमारे यहां पवित्र बंधन माना जाता है। इस सांस्कृतिक विश्वास के कारण इस पवित्र बंधन को सामाजिक मूल्यों के साथ निभाया जाता है। लेकिन वर्तमान परिस्थिती ने वैवाहिक संबंधों को तोडने के लिए प्रतिकुल है। 'आपका बंटी' उपन्यास के द्वारा लेखिका ने पुराने मूल्यों एवं नए मूल्य में समन्वय की आवश्यकता को प्रस्तुत करती है। इस उपन्यास में मध्यवर्गीय परिवार संबंध विच्छेद की स्थिति और जीवन में अहं की समस्या एक बच्चे की दुनिया में दुख की परिस्थिति आदि का चित्रण प्रस्तुत होता है। इस उपन्यास का शकुन स्त्री पात्र में स्वतंत्र व्यक्तित्व और आधुनिक दृष्टिकोण प्रस्तुत होती है। वह बंटी को अजय के प्रतिरूप में देखती हैं। वह अपने अहं की रक्षा के लिए बंटी को हॉस्टल बेचकर अपने दायित्व निर्वाह करती है। वह अजय को बदला लेने के संदर्भ में इस प्रकार कहती हैं कि "अजय को दिखा ही देना है कि वह अगर एक नई जिंदगी की शुरुआत कर सकता है तो वह भी कर सकती हैं।" मानवीय संवेदना के अभाव में विकसित पारिवारिक विघटन में प्रस्थापित जीवन मूल्य का स्थानीय में अब नवीन जीवन मूल्य रूपांतरण को प्रस्तुत करती है।

20वीं शताब्दी में औद्योगीकरण और नगरीकरण बढ़ने से व्यक्ति में दुर्बल और अस्थाई मानसिकता पर अपने लगा व्यक्तिवादी मानसिकता ने मनुष्य का दायरा को संकुचित किया और भौतिक उन्नति के प्रति आस्था उसको और अधिक स्वार्थी बनाया। इसका चित्रण उषा प्रियंवदा ने 'रुकोगी नहीं राधिका' उपन्यास में बदलती स्थितियों के नए परिपेक्ष्य ने पुराने रिश्तों की बदलती हुई चित्रण को व्यक्त करती हैं कि "भौतिक साधनों को हासिल करने की इस दौड़ में पारिवारिक संबंध अपने आप में शीतल हो रहे हैं।" उषा प्रियवंदा ने इस चुनौती को स्वीकार कर रिश्तो के परंपरागत परिचित रूपों के बीच से न जाने कितने नए पहलुओं को उबरा है संबंधों के टूटे बनते बिगड़ते तंतु ऑन को तथा वर्तमान बदलाव को सही ढंग से पकाने समझने और व्यक्त करने की जिम्मेदारी को उषा जी ने बखूबी निभाया और बहुत ही युग के स्वार्थवरण से मंदिर रिश्तो को उघाड़कर रख दिया है।

ममता कालिया रचित 'दौड़' उपन्यास में भौतिकवादी दौड़ में भाग रहे नव युवकों के जीवन मूल्य में बदलती मानसिकता को प्रस्तुत करती है। अर्थ युवा के दृष्टि में महत्वपूर्ण चीज है बनता है उसके सभी रिश्ते नाते जी में जिम्मेदारी आदि सब समाहित है। इस उपन्यास का युवा पात्र सघन अपने पिता से इस प्रकार कहता है कि, "यहां मेरे लाइफ नौकरी कहां पापा?... मेरे लायक शहर महत्वपूर्ण नहीं है, करियर है।... मैं शहर में रहना चाहता हूं जहां कलर हो न हो कंज्यूमर कलचर जरूर हो मुझे संस्कृति नहीं उपभोक्ता संस्कृति चाहिए तभी मैं कामयाब रहूंगा।" इस तरह आधुनिक काल के युवा मानसिकता को प्रस्तुत होता है।

वर्तमान काल में युवा लेखिका इंदिरा डोंगी रचित उपन्यास 'रपटीले राजपथ' में समाज की दृष्टि से नैतिक भावनाओं को प्रस्तुत किया हैं। इस उपन्यास में लेखिका ने सहज जीवन के प्रति अपनी चेतनाशील मानसिकता को इस प्रकार व्यक्त करते हैं कि "व्यक्तिगत स्वतंत्रता के नाम पर कोई भी कुछ भी करें यह तो सिर्फ पशुओं में होता है! सार्वजनिक स्थल जैसे पार्क या चौराहे पर अगर कोई सेक्स करने लगे या नंगा घूमने लगे और कहे की यह उसकी व्यक्तिगत स्वतंत्रता है तो भाई मैं कहूंगा कि ऐसे व्यक्तिगत स्वतंत्रता तो पूरे समाज को पतंग की ओर ले जाती हैं।" दूसरी संदर्भ में लेखिका ने विवाह संस्कार में युवा मानसिकता को अपने आधुनिक विचार के साथ इस प्रकार प्रस्तुत करती हैं कि, "पर पहले एक दूसरे को जानने समझने के लिए कुछ समय साथ रहना भी तो जरूरी समझते हैं आधुनिक लड़के लड़कियां।"

इंदिरा डांगी रचित 'हवेली सनातनपुर' उपन्यास में पारिवारिक जिम्मेदारियां के संदर्भ में आधुनिक समाज के लड़कियों ने निडर मानसिकता को प्रस्तुत करती हैं। इस उपन्यास में विवाह के पहले नारी में विकसित आधुनिक विचार से नारी की दृढ़ता एवं क्षमता प्रस्तुत होती हैं। परिवार और बाह्य स्थितियों को अपने जिम्मेदारियां को निभाने में आधुनिक नारी सक्षम रहते हैं। इसका चित्रण इस प्रकार है कि कुशाग्रि युवती अपनी शादी से पहले अपने होने वाले पति प्रीतम से फोन कर सुन लिया की, "वह अपने नन्हे भाई को सौतेली मां के पास घरेलू नौकर बन जाने के लिए एक दिन को भी नहीं छोड़ेगी और इधर–पिता कमल कुमार को भी बता चुकी थी कि आपसे जिम्मेदारी और रिश्ते के तौर पर भाई सिर्फ उसका है।"

सुरभि सिंगल रचित 'वापसी इंपॉसिबल' में फेसबुक लव के प्रति लेखिका युवा पीढ़ी के मानसिकता को प्रस्तुत करती हैं। आजकल युवा पीढ़ी फेसबुक और इंस्टाग्राम की नशा में पीड़ित रहते हैं। इसका चित्रण उपन्यास में लेखिका ने इस प्रकार व्यक्त करते हैं कि, "ताजुब सिर्फ इतना रहा कि सिलसिले यहां ना रुकने वाले थे, न रुके। दिन बीता, फिर रात, रोजमर्रा की भेंट चढ़ गयी । इसके बाद रोज के आठ पहर आते जाते गये तो फेसबुक के दर्शन मानव दुर्लभ कर लिए मेरी अंतरात्मा न।"

युवा लेखिका योगिता यादव ने अपनी उपन्यास 'ख्वाहिशों के खांडववन' में आधुनिक नारी की आत्मनिर्भरता को प्रस्तुत करती हैं। इस उपन्यास में नारी में विकसित आधुनिक विचार का प्रस्तुतिकरण उपन्यास में इस प्रकार है कि, "जब मैं चाचा जी के लिए आटा चक्की वाले के रिश्ते से इनकार कर दिया और कहा कि मुझे शादी करनी हो नहीं चाहिए। मैं अकेले बिना शादी के भी रह सकती हूं, पढ़ लिख रही हूं, खुद कोई नौकरी करूंगी आप लोगों पर बोझ नहीं बनूंगी।" इससे नारी की आत्मा निर्भरता का झलक प्रस्तुत होती हैं। युवा लेखिका अनु सिंह चौधरी ने अपने उपन्यास 'भली लड़कियां बुरी लड़कियाँ में नारी की सुरक्षा के प्रति चेतना को जागृत करती हैं। उन्होंने उपन्यास में अपनी विचार को इस प्रकार व्यक्त करते हैं कि "जब सुरक्षा की जिम्मेदारी अपनी है तो हमारे सुरक्षा और हमारे भरोसे के साथ खिलवाड़ करने वाले को सरे आम सजा देने का हक हमें क्यों ना हो।"

निष्कर्ष

स्वतंत्रता के बाद हिंदी साहित्य में महिला लेखिकाएं अपना महत्वपूर्ण स्थान बनाई है उन्होंने नारी की मानसिकता को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करती हैं। उन्होंने अपनी रचनाओं में सामाजिक आर्थिक धार्मिक सांस्कृतिक राजनीतिक परिस्थितियों को अपनी महत्वपूर्ण विचारों से स्थापित करती हैं। व्यक्ति का व्यवहार रहन–सहन में बदलती मानसिकता को सामाजिक विकास के तौर पर प्रस्तुत करती हैं। साहित्य की दृष्टि में व्यक्ति समाज को उपेक्षा कर सकता है। लेकिन समाज व्यक्ति को ऊपर तक नहीं करता है क्योंकि व्यक्ति समाज का महत्वपूर्ण अंग है। अतः इसे ध्यान में रखते हुए लेखिकाओं ने अपनी महत्वपूर्ण रचनाओं के द्वारा समाज को विकसित करती हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. नारी अम्मा मान जाओ, कृष्ण अग्निहोत्री, किताब घर प्रकाशन, दरियागंज, 2008, पृ.123
2. राजी सेठ, स्त्री सृजन और अस्मिता बोध,हंस, मार्च 2000, पृ. 32
3. माई, गीतांजलि श्री, राजकमल प्रकाशन, 2018, पृ.147.

4. पारिजात, नासिरा शर्मा, किताब घर प्रकाशन नई दिल्ली, 2022, पृ.481.
5. आपका बंटी, मन्नू भंडारी, राधा कृष्ण प्रकाशन, 1971, पृ 210
6. रुकोगी नहीं राधिका, उषा प्रियंवदा, राजकमल प्रकाशन, 1966, पृ. 125
7. दाऊद ममता कालिया, वाणी प्रकाशन, 2000, पृ. 43
8. रपटीले राजपथ, इंदिरा डोंगी,राजपाल एंड संस, 2014, पृ. 103
9. वहीं
10. हवेली सनातनपुर इंदिरा डोंगी, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, 2014, पृ.7
11. वापसी इंपॉसिबल सुरभि सिंगल, रेडक्रास बुकस, 2015, पृ.21
12. ख्वाहिशों के खांडववन, योगिता यादव, सामयिक प्रकाशन, 2017, पृ.9
13. भली लड़कियॉ बुरी लड़कियॉ, अनु सिंह चौधरी, हिंदी युग्म, 2019, पृ.16